IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले घरेलू और स्कूल संबंधी कारकों का विश्लेषण "

पुलकित शर्मा , प्रवक्ता (शिक्षाशास्त्र)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर-पीलीभीत (उ0 प्र0)

1.सारांश-

समावेशी शिक्षा का तात्पर्य है ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें सभी प्रकार के बच्चों को, उनकी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक या बौद्धिक स्थिति की परवाह किए बिना, समान अवसर मिले। यह शिक्षा का वह मॉडल है जो भेदभाव को खत्म कर, विविधता को स्वीकार करते हुए सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। सामाजिक समावेशन, मानव अधिकारों का सम्मान, और समान अवसर समावेशी शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य हैं।

भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक, विविधताओं से भरे देश में समावेशी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यहाँ पिछड़े वर्ग, वंचित पक्ष, विकलांग और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की संख्या काफी है। समावेशी शिक्षा से ही वे समुदायों का विकास संभव है जो अब तक शिक्षा के सामान्य प्रवाह से बाहर रहे हैं।

2. उद्देश्य

इस लघु शोध पत्र का उद्देश्य है:

- समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख घरेलू और स्कूल संबंधी कारकों की पहचान करना।
- इन कारकों का विश्लेषण करना कि किस प्रकार वे शिक्षा की गुणवत्ता, उपलब्धता और बच्चों के समावेशन पर प्रभाव डालते हैं।
- समस्याओं और बाधाओं को उजागर करना जिनसे समावेशी शिक्षा के प्रयास प्रभावित होते हैं।
- प्रभावी उपायों व नीतियों के सुझाव देना जिनसे शिक्षा को समावेशी बनाया जा सके।

3. समावेशी शिक्षा के सिद्धांत

- समानता: हर बच्चा समान रूप से शिक्षा का अधिकार रखता है।
- विविधता का सम्मान: हर बच्चे की क्षमता, पसंद, और जरूरत को पहचानकर शिक्षा देना।
- सहभागिता: बच्चे को उसके सामाजिक और शैक्षिक परिवेश में सक्रिय भागीदार बनाना।
- सामाजिक एकीकरण: बच्चे के समाज में पूर्ण और सम्मानित भागीदारी को सुनिश्चित करना।

4. घरेलू कारक

जो समावेशी शिक्षा को प्रभावित करते हैं -

4.1 परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

अधिकांश शोधों से पता चलता है कि बच्चों की शिक्षा पर परिवार की आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चे शिक्षा के संसाधनों, जैसे किताबें, पढ़ाई के लिए शांत स्थान, ट्यूशन आदि से वंचित रहते हैं। इसके कारण उनकी स्कूल में भागीदारी और प्रदर्शन प्रभावित होता है।

4.2 माता-पिता की शिक्षा और जागरूकता

माता-पिता की शिक्षा स्तर बच्चे की शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षित माता-पिता बच्चे के आगे बढ़ने के लिए सल्लाह, सहायता और प्रेरणा देते हैं। जबकि कम शिक्षित या अनजान माता-पिता बच्चों के शैक्षिक मुद्दों को समझने और उनको सहयोग देने में असमर्थ हो सकते हैं, जिससे समावेशी शिक्षा पर नकारात्मक असर पड़ता है।

4.3 परिवारिक वातावरण

एक प्रेममयी, सहयोगी और प्रेरणादायक घरेलू वातावरण बच्चे के आत्मविश्वास और सीखने की क्षमता को बढ़ाता है। जहां बच्चों को खुलकर सवाल पूछने और अपनी समस्याएं बताने का अवसर मिलता है, वे अधिक सक्रिय होते हैं। इसके अलावा, घरेलू तनाव, घरेलू हिंसा या लापरवाही समावेशी शिक्षा के लिए बाधक बनती है।

4.4 सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता

अलग-अलग भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे स्कूल में अपनी भाषा, परंपरा और रीति-रिवाज के कारण समझौते या संवाद में दिक्कतों का सामना करते हैं। ऐसा होने पर वे अपनी कक्षा में पूरी तरह सम्मिलित नहीं हो पाते और शिक्षा में पीछे रह जाते हैं।

4.5 अभिभावकों की भागीदारी

शोध से पता चला है कि अभिभावकों का स्कूल गतिविधियों और बच्चों की पढ़ाई में सक्रिय योगदान बच्चे की सफलता के लिए आवश्यक है। घर और स्कूल के बीच तालमेल बच्चों को बेहतर सीखने में मदद करता है और समावेशिता को बढ़ावा देता है।

5. स्कूल संबंधी कारक

जो समावेशी शिक्षा को प्रभावित करते हैं

5.1 शिक्षकों की योग्यता और दृष्टिकोण

शिक्षक ही समावेशी शिक्षा के सबसे बड़े प्रेरक होते हैं। समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण, उनके दृष्टिकोण में सकारात्मकता और पूर्वाग्रह से मुक्त होना आवश्यक है। यदि शिक्षक विविध छात्रों की आवश्यकताओं को समझते हुए उनके अनुसार विधि और सामग्री तैयार करते हैं, तो शिक्षा अधिक प्रभावी होती है।

5.2 पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री

समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम लचीला और अनुकूल होना चाहिए, ताकि सभी प्रकार के छात्र—विशेष आवश्यकता वाले, सामान्य, या विकलांग—अपने स्तर पर सीख सकें। शिक्षण सामग्री में वे विविधताएं होनी चाहिए जो बच्चों की क्षमता के अनुसार समायोजित हों।

5.3 स्कूल की भौतिक संरचना व संसाधन

स्कूल में रैंप, विशेष शौचालय, सहायक उपकरण, और पाठ्यपुस्तकों जैसे संसाधन उपलब्ध होना जरूरी है। इसके बिना शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों की शिक्षा में बाधा आती है।

5.4 सहपाठी और सामाजिक माहौल

एक सहायक और स्वीकार्य सामाजिक माहौल बच्चों को आत्मविश्वास देता है। सहपाठियों का सहयोग, तालमेल और सहनशीलता समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए जरूरी हैं।

5.5 प्रशासनिक समर्थन और नीतियां

स्कूल प्रशासन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, जो समावेशी शिक्षा के लिए नीतियों का क्रियान्वयन, संसाधन आवंटन और समर्थन करता है।

6. चुनौतियाँ

- पिता/माता की जागरूकता में कमी
- पर्याप्त आर्थिक संसाधनों का अभाव
- शिक्षकों का प्रशिक्षण व समावेशी दृष्टिकोण का अभाव
- अनुपयुक्त पाठ्यक्रम और मूल्यांकन व्यवस्था
- स्कूल में अव्यवस्थित संसाधन और भौतिक सुविधाओं की कमी
- सामाजिक कलंक और बाधाएं जो कुछ बच्चों के समावेशन में रुकावट डालती हैं

7. समाधान और सुझाव

7.1 अभिभावक और समुदाय के लिए जागरूकता कार्यक्रम

अभिभावकों के लिए कार्यक्रम

- **परामर्श और मार्गदर्शन:** समावेशी शिक्षा के लाभों और समावेशी वातावरण को घर पर बढ़ावा देने के तरीकों पर नियमित परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान करना।
- **कार्यशालाएं:** समावेशी शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों पर अभिभावकों को शिक्षित करने के लिए कार्यशालाएं आयोजित करना।
- **संचार:** शिक्षकों के साथ नियमित संवाद और बच्चे की प्रगति के बारे में जानकारी का आदान-प्रदान।
- **सक्रिय भागीदारी:** स्कूल की गतिविधियों, जैसे कि भ्रमण या पाठ्येतर गतिविधियों, में स्वयंसेवा करके सक्रिय रूप से भाग लेना।

समुदाय के लिए कार्यक्रम

- **जागरूकता अभियान:** कलंक और भेदभाव को दूर करने के लिए समावेशी शिक्षा के लाभों और महत्व के बारे में समुदाय के सदस्यों को शिक्षित करने के लिए अभियान चलाना।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाने के लिए इंटरैक्टिव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की पहल का आयोजन करना।
- **सामुदायिक भागीदारी:** स्थानीय संगठनों और सामुदायिक समूहों को समावेशी शिक्षा के लिए एक मजबूत समर्थन नेटवर्क बनाने में शामिल करना।
- **विशेष ओलंपिक जैसे अवसर:** विकलांग बच्चों के लिए विशेष ओलंपिक जैसे अवसरों को बढ़ावा देना, जिससे समुदाय में उनकी प्रतिभाओं के बारे में जागरूकता बढ़े।
- **स्थानीय पहल:** स्थानीय स्कूल के नेताओं और सामुदायिक सदस्यों को मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करना और आवश्यक संसाधनों और रणनीतियों को साझा करना।

7.2 शिक्षकों का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के मुख्य पहलू

- **अवधारणाओं और सिद्धांतों की समझ:**
  - समावेशी शिक्षा के दर्शन और सिद्धांतों से परिचित होना।
  - कक्षा में विविधता के महत्व को समझना।
  - विकलांग छात्रों के अधिकारों को समझना।
- **कौशल विकास:**
  - **कक्षा प्रबंधन:** सभी छात्रों को शामिल करने और उनका प्रबंधन करने के लिए प्रभावी तकनीकें विकसित करना।
  - **शिक्षण रणनीतियाँ:** सभी छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलित और नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करना।
  - **संचार कौशल:** छात्रों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के तरीके सीखना।
  - **समस्या-समाधान:** जटिल शैक्षिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान करना।
- **व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल:**
  - आत्म-चिंतन और नेतृत्व कौशल विकसित करना।
  - लचीला और व्यक्तिगत दृष्टिकोण अपनाना।
  - पारस्परिक और सामाजिक कौशल में सुधार करना।
- **नियोजन और कार्यान्वयन:**
  - यह जानना कि व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (IEP) कैसे बनाई जाती हैं।
  - छात्रों को सीखने की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।
  - स्कूल के माहौल में समावेशी प्रथाओं को लागू करना।

प्रशिक्षण के लाभ

- **सुरक्षित और स्वागत योग्य वातावरण:** शिक्षक एक ऐसा सुरक्षित और सम्मानजनक कक्षा वातावरण बना सकते हैं जहाँ हर बच्चा मूल्यवान और समर्थित महसूस करता है।
- **समान अवसर:** सभी छात्रों को समान शैक्षणिक और सामाजिक अवसर मिलते हैं।
- **बढ़ा हुआ आत्मविश्वास:** छात्रों के बीच बेहतर सामाजिक मेलजोल से आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ता है।
- **बढ़ा हुआ प्रदर्शन:** प्रभावी शिक्षण और सहयोग से छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर हो सकता है।

7.3 पाठ्यक्रम में लचीलापन

मुख्य पहलू

- **व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप:**
  - एक लचीला पाठ्यक्रम सभी छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होता है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं।
  - इसमें संशोधित या अनुकूलित पठन सामग्री और मूल्यांकन विधियों का उपयोग करना शामिल है।
- **सीखने के लिए सार्वभौमिक डिज़ाइन (UDL):**
  - यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि पाठ्यक्रम को पहले से ही विविध शिक्षार्थियों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे अनावश्यक बाधाओं को दूर किया जा सके।
  - इसका अर्थ है शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को पहचानना और अपनाना।
- **विविधता को अपनाना:**
  - पाठ्यक्रम को विविध दृष्टिकोणों और अनुभवों को एकीकृत करना चाहिए, जो छात्रों को विविध और वैश्विक वातावरण के लिए तैयार करता है।
  - यह सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखता है।
- **शिक्षण विधियों में लचीलापन:**
  - लचीलेपन के साथ शिक्षण विधियों को विभिन्न शैलियों के अनुकूल बनाने में मदद मिलती है।
  - यह छात्रों के लिए एक अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक वातावरण बना सकता है।
- **बाधाओं को दूर करना:**
  - यह सुनिश्चित करता है कि छात्र की पृष्ठभूमि, विशिष्ट सीखने की विशेषताओं या अन्य जिम्मेदारियों जैसी बाधाएं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में भागीदारी के रास्ते में न आएं।
  - यह छात्रों को उनकी वित्तीय स्थिति जैसी बाधाओं के बावजूद सफल होने का अवसर प्रदान कर सकता है।

7.4 भौतिक और तकनीकी संसाधन

भौतिक संसाधन

- **सुलभ बुनियादी ढाँचा:** स्कूल भवनों और कक्षा के सभी क्षेत्रों में भौतिक पहुंच सुनिश्चित करना, जैसे रैंप और सुलभ शौचालय।
- **लचीली बैठक व्यवस्था:** छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए अलग-अलग बैठने की व्यवस्था।
- **दृश्य और श्रवण वातावरण:** यह सुनिश्चित करना कि कक्षा का वातावरण सभी शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त है, जिसमें उचित प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि नियंत्रण शामिल है।

- **सुलभ शिक्षण सामग्री:** डिजिटल या पीडीएफ प्रारूप में ऐसी सामग्री प्रदान करना जो विभिन्न शिक्षण प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं को समायोजित कर सके।

तकनीकी संसाधन

- **सहायक प्रौद्योगिकियां:**
  - **श्रवण और दृष्टिबाधित छात्रों के लिए:** श्रवण यंत्र (hearing aids), स्क्रीन रीडर और स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ़्टवेयर।
  - **शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के लिए:** बड़े बटन वाले कीबोर्ड, टचस्क्रीन या अन्य अनुकूलनीय उपकरण।
- **सॉफ्टवेयर और ऐप्स:**
  - **भाषा अनुवाद और व्याख्या:** Google Translate जैसे ऐप छात्रों को उनकी मूल भाषा में सामग्री समझने में मदद करते हैं।
  - **द्विभाषी शिक्षण ऐप्स:** नई भाषाएँ सीखने में सहायता करते हैं।
- **संचार और पहुंच:**
  - **टेक्स्ट-टू-स्पीच (TTS):** छात्रों को सामग्री सुनने की अनुमति देता है, जिससे समझना आसान हो जाता है।
  - **स्मार्टबोर्ड और टैबलेट:** छात्रों को अधिक संवादात्मक और सुलभ तरीके से सामग्री में शामिल होने की अनुमति देते हैं, जो कम संसाधन वाले क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है।

7.5 सरकारी व गैर सरकारी सहयोग

सरकारी सहयोग

- **नीति और योजनाएँ:** सरकार समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीतियां और योजनाएं बनाती है, जैसे कि सभी दिव्यांग छात्रों को माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए समग्र शिक्षा योजना।
- **वित्तीय सहायता:** स्कूलों में आवश्यक सुविधाओं और संसाधनों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- **प्रशिक्षण:** शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना।
- **जागरूकता:** समावेशी शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- **डिजिटल अवसंरचना:** स्कूलों में डिजिटल शिक्षा के लिए भारतनेट और PM ई-विद्या जैसी पहलों के माध्यम से बुनियादी ढांचे का विस्तार करना।

गैर-सरकारी सहयोग (NGO)

- **नीति निर्माण और वकालत:** सरकारी नीतियों और प्रथाओं में सुधार के लिए वकालत करना और सरकार के साथ मिलकर काम करना।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों के लिए कार्यशालाएं, परामर्श सत्र और सम्मेलन आयोजित करके उनकी क्षमता बढ़ाना।
- **सामग्री और संसाधन:** ब्रेल पुस्तकें, ऑडियो संसाधन और तकनीकी सहायता जैसे सुलभ शिक्षण सामग्री और संसाधन प्रदान करना।
- **प्रत्यक्ष सहायता:** जरूरतमंद छात्रों को प्रत्यक्ष सहायता और परामर्श देना।

- **जागरूकता और सहभागिता:** माता-पिता और समुदाय को विशेष आवश्यकताओं के बारे में जागरूक करना और उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
- **समुदाय और नेटवर्क:** स्कूल, अभिभावकों और अन्य संगठनों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।

8. निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा का सफल कार्यान्वयन तभी संभव है जब घरेलू और स्कूल के सभी कारक सहयोगात्मक ढंग से सकारात्मक भूमिका निभाएं। इस हेतु माता-पिता का जागरूक होना, शिक्षक का समावेशी दृष्टिकोण, स्कूल का अनुकूल वातावरण और प्रशासनिक सहायता अनिवार्य है। इन सबके मेल से ही शिक्षा प्रणाली सभी बच्चों के लिए समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कर पाएगी। समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए, घरेलू और स्कूल-संबंधी दोनों कारकों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। माता-पिता, शिक्षक, स्कूल प्रशासन और समुदाय को एक साथ मिलकर काम करना होगा ताकि सभी छात्रों के लिए एक सहायक और समावेशी सीखने का माहौल बनाया जा सके।